1	Poonam Sonar	National	Kalyan	history of Subaltern Studies	Spark	

2020-21						
IV Research papers published by Faculty in UGC Care I/ National/International Journals						
Sr. No	Name of the Faculty	Conference (National/ International)	Conducting Body	Title of the Paper	Name of the Publication	ISSN No.
1	Poonam Sonar	InterNational	JJTU, Rajasthan	Vir Chatrapati Sambhaji Maharaj ke Jivan Sanghrsh		ISSN- 2395-5066

Eknath B. Madhavi Senior College of Arts, Commerce and Science Dombivli (East)

Dr. Omanakuttan N. Nair
I/c Principal
Eknath B. Madhavi Senior College
of Arts, Commerce and Science
Ayre Road, Dombivli (East)

CamScanner

2020-21

SHRI JAGDISHPRASAD JHABRMAL TIBREWALA UNIVERSITY

JHUNJHUNU-CHURU ROAD, VIDHYANAGARI, DISTT.- JHUNJHUNU (Rajasthan) 333001

2020-21

Online International Conference
[Multidisciplinary]

ON

"Emerging India through sustainable development and innovation in Atmanirbhar Bharat"

24th & 25th April 2021

ORGANIZED BY

Department of Commerce and Management

CERTIFICATE

Poonam Prakash Sonar

Research Scholar of Shri J.J.T.University, Vidhyanagari Jhunjhunu, Rajasthan has successfully participated in the Online International Multidisciplinary Conference.

Dr. Madhu Gupta
Registrar

Er. Bal Krishna Tibrewala
President

Dr. Jaideep Sharma
Convenor

CamScanner

वीर छत्रपति संभाजी महाराज के जीवन संघर्ष

Poonam Prakash Sonar
JJTU Scholar,Jhunjhunu.
Email ID – poonamsonar777@gmail.com
Registration No. 28419011

प्रस्तावना :-जब सम्राट औंरगजेब ने दक्षिण भारत में प्रवेश किया जब सम्राट औरंगजेब की सैन्य संख्या के बारे में मुगल इतिहासकारों द्वारा लिखित कोई विवरण प्राप्त नहीं है और मराठा लेखकों का विवरण विश्वास योग्य नहीं जान पड़ता। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि मुगल सम्राट औरंगजेब के पहले इतनी अधिक सशक्त सेना ने कभी भी दक्षिण भारत में पाँव नहीं रखा था। विदेशियों को छोड़कर इस समय मुगल सेना में काबुल, कान्धार, राजपूत, मुल्तान, लाहौर के अतिरिक्त सम्राट के विशाल साम्राज्य के सब कोनो के सैनिक इस अभियान में एकत्रित थे। सम्राट की सेना के पूर्ण शस्त्र सज्जित सैनिकों तथा नाना प्रकार के घोड़ों ने एक प्रकार का संकलन का दृष्य उपस्थित कर दिया था। जिनके सामने दक्षिण भारत के निम्न कद और हल्के शस्त्रों से सुसज्जित सैनिकों के लड़ने की बात कल्पना से भी परे की बात लगती थी। सम्राट औरंगजेब की सेना में पैदल सेना बन्दूकची, मशालची, और तीरन्दाज अपनी भारी तैयारी के साथ काफी बड़ी संख्या में थे। इसके अतिरिक्त पहाड़ी लडाईयों में मराठे मावलियों से कहीं अधिक युद्ध कुशल थे। इसके अतिरिक्त दक्षिण के अन्य स्थानों की मुगल सेनिकों की व्यस्त टुकडियाँ भी शाही खेमे में शामिल हो गई थीं। हिन्दुस्तानी सैनिकों के साथ यूरोपियन तोपचियों के प्रबन्ध के अन्दर सैंकड़ों तोपें थी। जिसके साथ विभिन्न प्रकार के कुशल कारीगरों के साथ भारी संख्या में सुरंग आदि खोदने में कुशल व्यक्तियों का पूरा जमावड़ा था। युद्ध कार्य में कुशल हाथियों की लम्बी पंक्ति के पीछे–पीछे सम्राट औरंगजेब के हरम की मल्काओं को अपने पीठ के हौदों पर बिठाये तथा सम्राट औरंगजेब के विशाल खेमों को अपनी पीठ पर रखे सवारी में आने वाले हाथियों का विशाल जत्था था। यह सम्राट औरंगजेब की व्यक्तिगत सवारी के लिये उपयोग होते थे। उसकी सवारी के लिये अनेकों, उच्च कोटि के घोड़े शानदार उपकरणों से सज्जित, तैयार रहते थे। उनके खेमे के साथ बडे–बडे पिंजडों में विभिन्न प्रकार के जंगली जानवारों का जमावड़ा था, जिन्हें उनके निरीक्षक साहसिक बहुदा पकड़कर अन्य दरबारियों के साथ सम्राट औरंगजेब को दिखा कर उसको संतुष्ट करते रहते थे। बाज, शिकारी कुत्ते, चीते तथा हाथी इत्यादि युद्ध उपयोगी जानवार उसके लश्कर के साथ ही चलते हुये शाही सेना की समृद्धि में वृद्धि प्रदान करते थे। उसके खेमे के निवास का बाहरी घेरा 1200 गज की परिधि में था, जिसमें एक महल के अन्दर पायी जाने वाली समस्त सुविधायें प्राप्त थी। जनता के समक्ष खुले दरबार तथा खास दरबारियों के साथ बैठने का कमरा तथा उसके प्रत्येक दरबारियों के अपने खास कमरे थे। यह सभी कमरे शानदार और कीमती उपकरणों से सुज्जित थे। उन विशाल कमरों में सम्राट औरंगजेब के बैठने के लिये ऊँचा सिंहासन रखा रहता था। उसके चारों ओर सोने का मुलम्मा चढे पीतल के खम्भों पर नाना प्रकार की उच्च कलाओं द्वारा सज्जित चंदोवा तना रहता था, जिसके कोर सुनहले और कीमती पच्चीकारी से भरपूर रहते थे। अलग–अलग तंबुओं में नमाज, दिशा स्थान, स्नान घर इत्यादि का प्रबन्ध रहता था। तीरन्दाजी तथा कसरत आदि के लिये भी तंबुओं में प्रबन्ध ही रहता था। सम्राट औरंगजेब का इन खेमों में बना हरम किसी भी प्रकार उसके दिल्ली के हरम से कम नहीं था। उसमें आराम और सौंदर्य के समस्त उपक्रम महलों के ही समान रहते थे। फर्नीचर गलीचे, छींटदार कपड़े, तथा बेल बूटे कढ़े दीवालों पर लगाये जाने वाले कपड़े, यूरोपीय उम्दा वस्त्र, साटन, अन्य चौड़े वस्त्र तथा चीन सिल्क की उच्चतम कोटियों के वस्त्र तथा भारतीय तंजेब और मलमल से सज्जित खेमों का सौंदर्य निराला लगता था। शाही खेमों के ऊपर चमकदार कंगूरे लगे रहते थे। कनबास के बाहरी हिस्से अपने सजीव रगांई और पच्चीकारी खेमों के महत्व को बढ़ते से प्रतीत होते थे। खेमे का प्रवेश

CamScanner